समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

● प्रकाशन दिनांक : १५ सितम्बर २०१३ ● वर्ष : १७ ● अंक : ०३ (निरंतर अंक : १९५)

मासिक समाचार पत्र

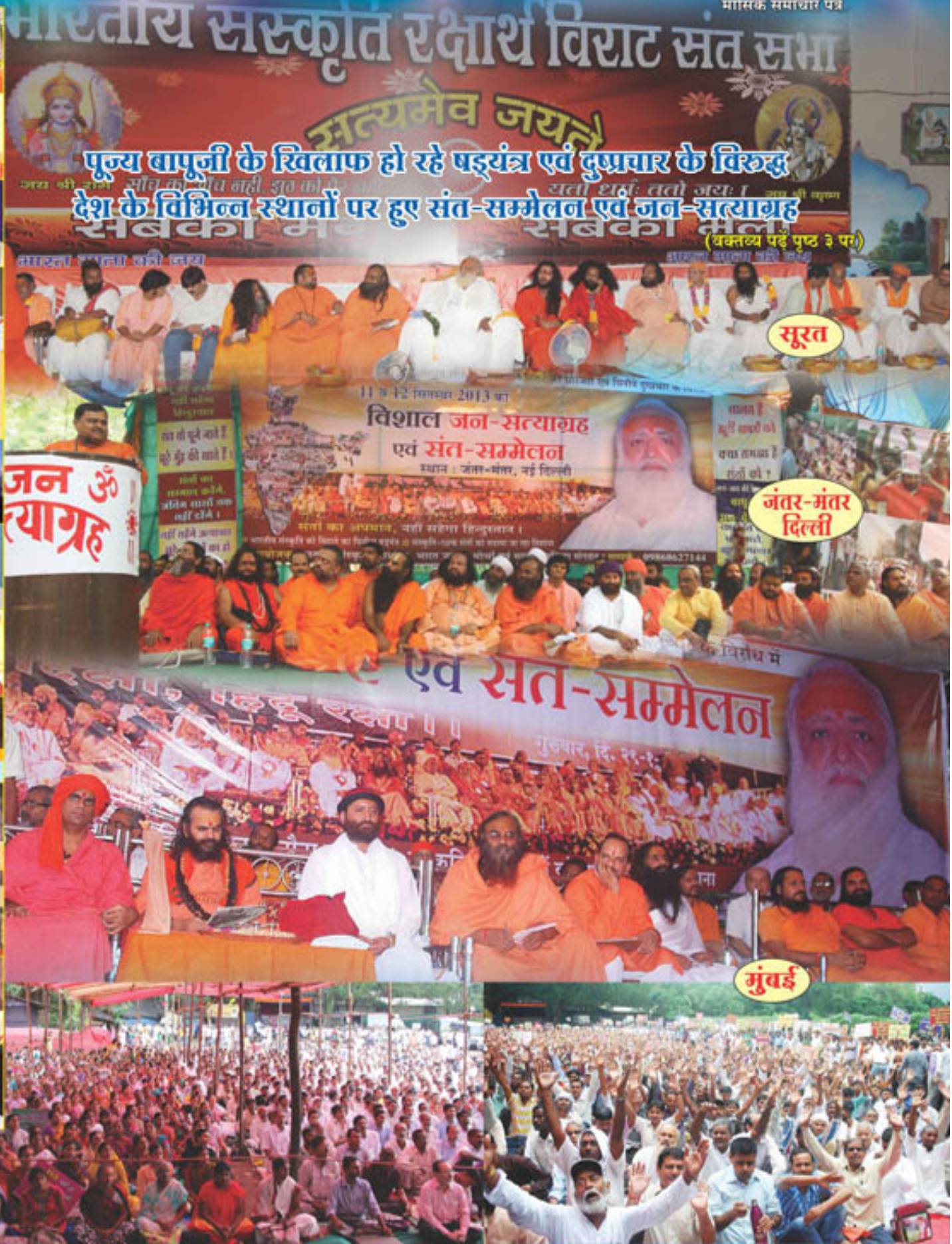

पूज्य बापूजी के खिलाफ हो रहे षड्यंत्र एवं दुष्प्रचार के विरुद्ध देश के विभिन्न स्थानों पर हुए संत-सम्मेलन एवं जन-सत्याग्रह

(वक्तव्य पढ़ें पृष्ठ ३ पर)

'A2Z' व 'सुदर्शन' जैसे संस्कृतिनिष्ठ विरले चैनलों ने पूज्य बापूजी के करोड़ों शिष्यों एवं जागृत जनता की आवाज समाज तक पहुँचायी परंतु अन्य अनेक चैनलों ने चुप्पी साध ली, ऐसा क्यों ?

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : १७ अंक : ०३

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : १९५)

प्रकाशन दिनांक : १५ सितम्बर २०१३ मूल्य : ₹ ३.५०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी

प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सदस्यता शुल्क :

भारत में : (१) वार्षिक : ₹ ३० (२) द्विवार्षिक : ₹ ५० (३) पंचवार्षिक : ₹ ११० (४) आजीवन : ₹ ३००

विदेशों में : (१) पंचवार्षिक : US $ 50 (२) आजीवन : US $ 125

सम्पर्क पता : 'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)

फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

★e-mail : lokkalyansetu@ashram.org ⊛ ashramindia@ashram.org

★web-site : www.lokkalyansetu.org ⊛ www.ashram.org

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

इस अंक में...

- षड्यंत्र के खिलाफ संत-समाज का शंखनाद ३
- आप कहते हैं... ६
- पूज्य बापूजी को बदनाम करने का सुनियोजित षड्यंत्र ७
- अमृत प्रजापति ने अपने ही मुँह से उगले राज १३
- महेन्द्र चावला व उसके आरोपों की हकीकत १४
- जैविक घड़ी पर आधारित दिनचर्या १५
- देश-विदेश में गूँजी पुकार, बंद हो बापूजी पर अत्याचार १६
- अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद करने सड़कों पर उतरे विभिन्न संगठन १७
- पुण्यदायी तिथियाँ १८
- संत सताये तीनों जायें, तेज बल और वंश १८

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS	आस्था	आस्था भजन	care WORLD	सत्य	मंगलमय चैनल
रोज प्रातः ३, ५-३०, ७-३० बजे, रात्रि १० बजे व दोप. २-४० (केवल मंगल, गुरु, शनि)	रोज सुबह ९-४० बजे	रोज रात्रि ९-२० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे	रोज दोपहर २-०० बजे	www.ashram.org पर उपलब्ध

षड्यंत्र के खिलाफ संत-समाज का शंखनाद

काशी सुमेरु पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वामी नरेन्द्रानंद सरस्वतीजी महाराज : ''षड्यंत्रों के तहत हिन्दू समाज पर अन्याय, अत्याचार बंद किया जाना चाहिए। संतों के सम्मान, स्वाभिमान की रक्षा होनी चाहिए।

अगर संतों को जेल में डालकर बदनाम करने का षड्यंत्र होता रहा तो भारत की अस्मिता, भारत की संस्कृति सुरक्षित नहीं रह पायेगी। इसे सुरक्षित रखने के लिए सबको एकजुट हो के प्रयास करना होगा। और वह दिन दूर नहीं कि आशारामजी बापू आप सब लोगों के बीच में आयेंगे, आरोपों से बरी होंगे और राष्ट्रहित, समाजहित होगा।''

''पूरे देश के भीतर एक प्रकार का वातावरण बनाया जा रहा है। हमारे संतों पर झूठे आरोप लगाये जा रहे हैं। हमारे पूज्य संत आशारामजी बापू की ७३ वर्ष उम्र है, उनके ऊपर रेप का चार्ज लगाकर उनको गिरफ्तार करते हो ? यह गिरफ्तारी हिन्दू समाज को बताने के लिए है कि तुम्हारे अंदर जो संतों का सम्मान है, निष्ठा है, जो श्रद्धा का भाव है इसको हम मिटाकर रख देंगे।'' **– श्री अशोक सिंहलजी, वि.हि.प. के मुख्य संरक्षक व पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष**

'अखिल भारतीय संत समिति' के राष्ट्रीय महामंत्री, महामंडलेश्वर श्री देवेन्द्रानंद गिरिजी महाराज : ''अखिल भारतीय संत समिति के संत पूज्य

बापूजी के साथ हैं। अब देश में महान क्रांति होगी !''

हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी चक्रपाणिजी महाराज : ''पूज्य बापूजी पर झूठे इल्जाम लगाये जाते हैं, बड़ा दुःख होता है। जिन्होंने कमाल की राष्ट्रसेवा का काम किया है ऐसे संत पर 'पॉक्सो एक्ट' का परीक्षण किया जा रहा है ! धिक्कार है !! वास्तव में पूज्य बापूजी केवल एक संत नहीं हैं, संत-शिरोमणि हैं।''

महामंडलेश्वर आचार्य श्री सुनील शास्त्रीजी महाराज : ''मैं आज पूर्णतः बिके हुए कुछ लोगों से सवाल करना चाहूँगा कि जब संविधान हमें कहता है कि जब तक दोष साबित न हो जाय तब तक उसे दोषी न माना जायेगा तो आपने हमारे संत आशारामजी बापू को दोषी कैसे कहा ? यह भारत के संविधान की अवमानना है। ६ करोड़ अनुयायियों के दिलों में तलवार घोंपना - क्या यह भारत के संविधान की हत्या नहीं है ?

जगद्गुरु जयेन्द्र सरस्वती पर भी आपने आरोप लगाया, सर्वोच्च न्यायालय में वे निर्दोष साबित हुए। क्यों नहीं मीडिया ने दिखाया ? आज तक आपने माफी क्यों नहीं माँगी ? हमारे संत-समाज का बहुत बड़ा संघ है। ये 'शांति-शांति-शांति...' कहते हैं इसलिए इनको इतना शांत मत समझो, क्रांति... क्रांति...!''

अखिल भारतीय संत समिति, हरियाणा के महामंत्री महामंडलेश्वर सूर्यानंद सरस्वतीजी : ''बापूजी बेदाग हैं, पाक हैं। इस सत्य की रक्षा के लिए जन-जन को आगे आना पड़ेगा।''

'आश्रम निर्मल कुटिया' के अध्यक्ष संत श्री बाबा देविन्दरसिंहजी : ''बापू आशारामजी जैसे महात्मा जो लाखों लड़कियों की इज्जत बचाने के लिए नित्य परिश्रम करते हैं, उनके ऊपर यह षड्यंत्र रचना बहुत निंदनीय है।''

'हिन्दू जनजागृति समिति' के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री रमेश शिंदेजी : ''पूज्य बापूजी निर्दोष हैं। जिसमें व्याभिचार होता था उस 'वेलेंटाइन डे' को बदलकर बापूजी ने 'मातृ-पितृ पूजन दिन' बनाया है। जो गलत राह पर जाते थे उन युवाओं को सही मार्ग पर लानेवाले बापूजी हैं और उनके ऊपर ये कैसे आरोप लगाते हैं !''

'गौरक्षा सेना' के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आशु मोंगिया : ''जो बापू के बारे में पेड समाचार छाप रहे हैं, उनसे मैं एक चीज पूछता हूँ कि क्या आप लोग कोई यथार्थ काम करते हैं या सिर्फ पैसा ले के काम करते हैं ?''

'विश्व हिन्दू परिषद' के केन्द्रीय मार्गदर्शक श्री लक्ष्मी नारायणजी (दायमा) : ''पूज्य बापूजी ने अपने जीवन की पूरी शक्ति, पूरी आध्यात्मिक शक्ति इस समाज को खड़ा करने के लिए लगा दी है। अब समाज इस शक्ति का सदुपयोग करे और कहे कि बापूजी ! अब हम आपका अपमान नहीं सहेंगे, नहीं होने देंगे। आपका अपमान समाज का अपमान है।''

'हिन्दू राष्ट्रनिर्माण महासंघ' के अध्यक्ष स्वामी श्री ओमजी महाराज : ''हमारे परम पूज्य बापूजी भारत के गौरव हैं, हिन्दू धर्म के गौरव हैं।''

'अखिल भारतीय संत समिति', गुजरात राज्य के अध्यक्ष श्री महंत स्वामी विश्वेश्वरानंदजी : ''जो संस्थाएँ भारत के विकास का काम कर रही हैं, उन पर कुठाराघात किया जा रहा है। पूज्य बापूजी जैसे महापुरुष पर ऐसे तुच्छ आरोप लगाये जाते हैं ! हम यह सहन नहीं करेंगे।''

महामंडलेश्वर श्री परमात्मानंदजी महाराज : ''पूज्य बापूजी हमारे विश्वगुरु हैं। **जहाँ राम तहाँ नहीं काम।** जहाँ साक्षात् आशाराम बैठे

हों वहाँ काम का क्या काम है ? ये जितना दुष्प्रचार है उसके पीछे पैसा है, राजनैतिक व धर्मांतरण करनेवाली ताकत है और अनेक एनजीओज् का रूप लेकर फैले हुए भारतीय संस्कृति को नष्ट करनेवाले षड्यंत्रकारी हैं।''

'क्रांतिसेना' के अध्यक्ष स्वामी चिदानंदजी महाराज : ''परम पूज्य आशारामजी बापू के ऊपर चल रहा यह षड्यंत्र विदेशी ताकतों द्वारा रचा जा रहा है। हमारी क्रांतिसेना के हजारों युवक, जो धर्म के लिए क्रांति करने के लिए तैयार हैं, उन्हें मैं यहाँ धर्मरक्षार्थ समर्पित करता हूँ।''

'सनातन संस्था' के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री अभय वर्तकजी : ''पूज्य बापूजी के ऊपर जो कीचड़ उछाला गया है, जो सरासर झूठे आरोप लगाये गये हैं यह देख के, सुन के हरेक हिन्दू के मन को पीड़ा हुई है।

जो चैनल हमारे पूजनीय बापूजी के ऊपर कीचड़ उछालता है, उस बिके हुए चैनल को पहले घर से निकाल देना चाहिए। हम बिकी हुई पत्रिका भी नहीं पढ़ेंगे।''

'श्रीराम सेना' के अध्यक्ष श्री प्रमोद मुतालिकजी : ''दुष्ट लोग यह जो अपमान कर रहे हैं वह बापूजी का अपमान नहीं है, हिन्दू समाज का अपमान है, भारत का अपमान है।''

'अखिल भारतीय संत समिति' के उपाध्यक्ष श्री परमेश्वरदासजी महाराज : ''पूज्य बापूजी जैसे संत तो कामवासनाओं से हजार कोस दूर रहते हैं। उन पर ऐसे घृणित आरोप लगवाना कितना दुर्भाग्यपूर्ण है।''

मौलाना बिलाल अब्दुल करीम कादरी : ''यकीन मानो बापूजी सच्चे हैं, अच्छे हैं, अल्लाह के नेक बंदे हैं।''

'श्रीकृष्ण प्रणामी सम्प्रदाय' के डॉ. मस्त बाबाजी : ''कुछ राजनेता और बिकाऊ मीडियावाले देश को बरबाद करने में लगे हुए हैं, हमारे संतों का अपमान करने में लगे हुए हैं। अब आप जागो और जगाओ, गलत प्रचार पर ध्यान मत दो।''

युवा क्रांतिद्रष्टा संत दिनेश भारतीजी : ''पाखंडी जो पैसे से तुलते हैं, वे बापूजी के ऊपर आक्षेप लगाते हैं। उनको 'अखिल भारतीय संत समिति' के पद से ही निकाल दिया गया। संत समिति को धन्यवाद है !''

पाटेश्वर धाम के अधिपति महात्यागी रामबालकदासजी : ''यह बापूजी पर हमला नहीं है, यह संत-समाज पर हमला है।''

'सुदर्शन चैनल' के चेयरमैन श्री सुरेश चव्हाणके : ''आज इस दुनिया की बेईमानी का, दुष्कृत्यों का सबसे बड़ा शत्रु अगर कोई है तो बापूजी हैं। इसलिए उनके ऊपर सबसे ज्यादा हमले (षड्यंत्र) हो रहे हैं।

सूरत आश्रम में २००६ के गुरुपूर्णिमा पर मैंने कैमरे के सामने कहा था कि 'बापूजी ! अभी आपके खिलाफ षड्यंत्र चल रहे हैं और जल्दी ही आपकी ऐसी-ऐसी बदनामी होगी कि आप सोच भी नहीं सकते।' उस समय मैं डाँग (गुजरात) क्षेत्र से आया था, वहाँ पर बापूजी ने धर्मांतरण रोकने का बहुत बड़ा काम किया था। पिछले १० सालों में इस देश को गुलाम बनाने से रोकने में सबसे जो बड़ी शक्ति है तो वह आशारामजी बापू हैं। इसी कारण ये सबसे ज्यादा निशाने पर हैं। ऐसे में हम लोगों को पूज्य बापूजी का साथ देना जरूरी है।

मैं यह कहूँगा कि ये सारे चैनल दो कारणों से ऐसा दुष्प्रचार करते हैं। एक तो बड़ा कारण है स्पोंसरशिप, दूसरा कारण है टीआरपी। एक आसान काम है, जब भी ऐसी न्यूज शुरू हो तो देश के

करोड़ों भक्त उन चैनलों को बंद कर दें। अगर ६ करोड़ साधक ऐसे चैनलों को बंद कर दें तो ये सारे अनाप-शनाप बोलनेवाले बंद हो जायेंगे। दूसरा, सोशल मीडिया में ऐसे चैनलों के जो पेज हैं उनको डिस्लाइक करें, उस पर अपनी बातों को रखें। तीसरा, ऐसे सम्मेलन तहसील, जिला, राज्य स्तर पर, विभिन्न जगहों पर किये जायें। आखिर आज भी टीवी से कई गुना ज्यादा प्रत्यक्ष सत्संग का परिणाम होता है। सत्य और मजबूत होगा। इस लड़ाई के लिए मीडिया में और अच्छे लोगों की जरूरत है, 'सुदर्शन' जैसे कई चैनलों की आवश्यकता है।''

डॉ. सुमन (भूतपूर्व पादरी रॉबर्ट सॉलोमन, इंडोनेशिया) : ''धर्मांतरण करनेवाले लोग हमारे पूजनीय बापूजी के खिलाफ साजिश कर रहे हैं। आज समय की माँग है ऊँच-नीच, भेदभाव को समाप्त करके समर्थ हिन्दू समाज का निर्माण !''

आप कहते हैं...

हिन्दू-विरोधी एवं राष्ट्र-विरोधी ताकतों के गहरे षड्यंत्रों को और हिन्दू संतों को बदनाम करने के

उनके अप्रकट हथकंडों को सीधे व भोले-भाले हिन्दू नहीं देख पा रहे। – **प्रसिद्ध न्यायविद् श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी**

''साधु-संतों के बारे में अनेक आरोप लगाने की परम्परा देश में तेज हुई है। आपने किसी मौलवी पर, क्रिश्चियन पादरी पर आरोप लगाते हुए देखा है ? और आशारामजी बापू का जीवन बहुत सात्त्विक संत का जीवन है।''

– श्री प्रवीण तोगड़िया, अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, वि.हि.प.

''संत आशारामजी बापू निर्दोष हैं, संत उनके साथ हैं।''

– भाजपा उपाध्यक्ष साध्वी उमा भारती

''बापू के खिलाफ राजनैतिक साजिश हो रही है। प्रारम्भ से ही वे एक राजनैतिक पार्टी के निशाने पर हैं।''

डॉ. रमन सिंह, मुख्यमंत्री, छ.ग.

''पूज्य बापूजी को बेवजह परेशान न किया जाय।''

– श्री उद्धव ठाकरे, शिवसेना प्रमुख

किसीके भी ऊपर इस प्रकार का आरोप लगाना आसान है। आज संत आशारामजी के अनुयायी दुनियाभर में हैं। ऐसी घटना के कारण उनकी छवि को कितनी ठेस पहुँचेगी यह समझने की बात है। घटना बताते हैं जोधपुर (राज.) की और ५ दिन तक लड़की व उसके परिवारवाले दिल्ली में रहे, कहाँ-कहाँ रहे, किसीको नहीं पता। उसके बाद दिल्ली में रिपोर्ट लिखवायी, राजस्थान में क्यों नहीं ? यह साजिश ही हो सकती है।

– श्री कैलाश विजयवर्गीय, वाणिज्य, उद्योग एवं सूचना प्रोद्योगिकी मंत्री (म.प्र.)

''मेरा मानना है कि किसी-न-किसी षड्यंत्र का शिकार माननीय आशारामजी बापू को किया जा रहा है और इसकी निष्पक्ष जाँच होगी तो ऐसे बिंदु निकलकर आयेंगे जिनसे हमारे बापू निर्दोष साबित होंगे।''

– श्री नरोत्तम मिश्र, स्वास्थ्य मंत्री (म.प्र.)

(हर मानवताप्रेमी, देशप्रेमी इसे अवश्य पढ़े।)

पूज्य बापूजी को बदनाम करने का

सुनियोजित षड्यंत्र

पिछले ५० वर्षों से 'संयम-साधना व सत्संग' की महिमा को जन-जन तक पहुँचानेवाले एवं पिछले ८ वर्षों से विश्वभर के युवानों को ओज-तेज का नाश करनेवाले 'वेलेंटाइन डे' की जगह १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने की सुंदर प्रेरणा देनेवाले पूज्य संत श्री आशारामजी बापू संयम, स्नेह, ब्रह्मचर्य, ब्रह्मनिष्ठा व लोक-कल्याण के मूर्तिमंत स्वरूप हैं। परंतु भारतीय संस्कृति के खिलाफ कार्य करनेवाली विधर्मी ताकतें तथा जिन्हें भारतवासियों की नैतिक एवं सांस्कृतिक उन्नति से भारी नुकसान होता है वे मीडिया के माध्यम से करोड़ों रुपये खर्च करके भी समय-समय पर संतश्री के खिलाफ बड़े-बड़े षड्यंत्र करते आये हैं। ऐसे ही एक सोचे-समझे षड्यंत्र के तहत २० अगस्त को उत्तर प्रदेश की एक लड़की को मोहरा बनाकर उसके द्वारा छेड़खानी का झूठा आरोप लगवाया गया और फैलाया गया कि बलात्कार का आरोप लगाया गया है। अधिकांश मीडिया द्वारा झूठी, निराधार व बापूजी की छवि खराब करनेवाली खबरें फैलाकर करोड़ों देशवासियों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचायी गयी।

कैसे शुरू हुआ घिनौना षड्यंत्र ?

उत्तर प्रदेश की लड़की, जो मध्य प्रदेश में पढ़ रही थी, जोधपुर (राज.) में उसके साथ छेड़खानी हुई ऐसी एफआईआर दर्ज कराती है, कहाँ जाकर ? दिल्ली के भीतर कमला मार्केट थाने में पहुँचकर ! वह भी ५ दिन बाद रात २-४५ बजे !

लड़की की एफआईआर में स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से कहीं भी किसी भी तरह से दुष्कर्म (रेप) का उल्लेख नहीं है। लेकिन प्रसार-माध्यमों का सहारा लेकर 'रेप हुआ है' व 'मेडिकल टेस्ट में रेप की पुष्टि हुई है' ऐसी झूठी खबरें फैलायी गयीं।

लड़की की मेडिकल जाँच रिपोर्ट में रेप की बात को पूरी तरह खारिज कर दिया गया है एवं इसके बावजूद रेप की गैर-जमानती धारा ३७६ लगायी गयी, जो पूज्य बापूजी को बदनाम करके जेल में ही डाले रखने की सोची-समझी साजिश है। इस बात के लिए राजस्थान पुलिस ने दिल्ली पुलिस को फटकार लगायी तथा जोधपुर पुलिस डीसीपी अजय पाल लाम्बा ने स्पष्ट रूप से स्वीकार भी किया कि दिल्ली पुलिस ने केस गलत तरीके से दर्ज किया है।

दिनांक २७ अगस्त को पूज्यश्री इंदौर आश्रम में थे। वहाँ 'समन्स' थमाया गया कि ३० तारीख तक जोधपुर आना है। उसी समय बापूजी ने कई महत्त्वपूर्ण कारण दर्शाते हुए कुछ मोहलत माँगी थी और 'समन्स' थमानेवाले ने उस अर्जी पर अपने हस्ताक्षर भी कर दिये थे कि 'हम अर्जी को आगे तक पहुँचायेंगे।' बापूजी पूर्वनिर्धारित जन्माष्टमी कार्यक्रम के निमित्त २८ अगस्त को सूरत आश्रम में थे।

अपने कर्मयोगी शिष्य का अंतिम संस्कार करने हेतु भोपाल पहुँचे

मध्य प्रदेश के कई आश्रमों के सेवा-प्रभारी, सेवानिष्ठ साधक, भोपाल आश्रम के वरिष्ठ पदाधिकारी व नारायण साँईं के ससुर श्री देव कृष्णानीजी इस षड्यंत्र को सहन नहीं कर पाये। राजस्थान पुलिस का छिंदवाड़ा गुरुकुल की बच्चियों पर मानसिक दबाव, धाक-धमकी द्वारा जबरदस्ती मनचाहे बयान लेने जैसी हरकतों से तथा पूज्य बापूजी की गिरफ्तारी के लिए षड्यंत्रकारियों द्वारा रची गयी गहरी साजिश से उन्हें बहुत बड़ा सदमा लगा। उनकी धार्मिक भावनाएँ आहत होने से उन्होंने अन्न-जल का त्याग कर दिया था। अपने दिल की पीड़ा भोपाल कलेक्टर को ज्ञापन के रूप में दी व जब पीड़ा का कुछ निराकरण न दिखायी दिया तो हार्ट-अटैक से अपनी जान दे डाली। झूठी कल्पित कहानियाँ बनानेवालों ने दो दिन से अन्न-जल त्यागकर बैठे हुए इन सेवायोगी साधक के प्राण ले लिये। २९ अगस्त को प्रातः ३.२० बजे उन्होंने

शरीर छोड़ दिया। कुप्रचार के पूर्व वे पूरी तरह स्वस्थ थे। देशभर के साधकों ने इसका शोक जताया है। उन्होंने गुहार लगायी है कि बिना तथ्यों की झूठी खबरें न फैलायी जायें ताकि हमें हमारे महत्त्वपूर्ण, राष्ट्रसेवी साधकों को इस प्रकार खोना न पड़े।

पूज्य बापूजी देव कृष्णानीजी के हादसे को सुनकर उनके अंतिम संस्कार के लिए बीच जन्माष्टमी कार्यक्रम में ही सूरत से भोपाल पहुँचे। उनको बेटियाँ ही थीं, अतः बापूजी, अन्य रिश्तेदार व साधकों ने कंधा दिया।

पूज्य बापूजी को गिरफ्तार करने की घिनौनी साजिश

राजस्थान पुलिस को मोहलत बढ़ाने के लिए खबर की गयी थी। कोई उत्तर न मिलने पर ३० तारीख को जेट एयरवेज की टिकट बापूजी ने करा ली थी। परंतु ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया (आयुर्वेद के अनुसार अनंत वात) की भयंकर पीड़ा के कारण टिकट कैंसल करानी पड़ी। यह पीड़ा प्रसूति व हार्ट-अटैक की पीड़ा से भी अधिक भयंकर होती है। इसमें थोड़ी-सी असावधानी से शरीर का अंत हो सकता है, व्यक्ति की मौत हो सकती है। इंटरनेट पर सबसे पीड़ादायक रोग के रूप में इसका वर्णन आता है। फिर शाम को भोपाल से वाया दिल्ली जोधपुर जाने हेतु भोपाल एयरपोर्ट पहुँचे परंतु मीडिया व लोगों की भीड़ के कारण बोर्डिंग काउंटर बंद हो गया। टिकटों के रूप में प्रूफ भी हमारे पास हैं।

परिश्रम, जागरण, तनाव होने पर भी बापूजी बाई रोड इंदौर के अपने आश्रम पहुँचे। किसी अनजान स्थान पर नहीं गये। इसके विपरीत कुछ-का-कुछ उछाला गया कि भाग गये आदि। मध्य प्रदेश की पुलिस ३१ तारीख को सुबह लगभग ६ बजे आश्रम पहुँच चुकी थी और पूरी कुटिया को सैकड़ों पुलिसवालों ने घेर लिया था। दोपहर तक भक्त भारी संख्या में इकट्ठे हो गये थे। ३१ तारीख रात को इंदौर आश्रम के व्यासपीठ से जाहिर सत्संग में बापूजी ने १६७ देशों को इंटरनेट लाइव द्वारा संदेश देते हुए खुलेआम कहा : ''हम जोधपुर पुलिस का इंतजार कर रहे हैं व स्वागत करते हैं। किसी कारण से शरीर की अचानक पीड़ा से नहीं जा पाये। वह पीड़ा अभी तक यथावत् बनी हुई है।''

पूज्यश्री का रक्तचाप १६०/१२० था। हृदय में भारीपन व छाती में दर्द भी था। वैद्यों ने पुलिस से निवेदन किया कि हम डॉक्टर को बुलाना चाहते हैं। डॉक्टर आये।

जोधपुर की पुलिस आश्रम में पहुँच गयी। बापूजी ने उनसे कहा : ''आप निश्चिंत रहना। हम भाग नहीं जायेंगे, हम भगेड़ू नहीं हैं। हम वचन देते हैं कि आपको पूरा सहयोग करेंगे।''

पुलिस ने कहा : ''कल सुबह ७.५० की फ्लाइट से हम आपको दिल्ली ले जायेंगे। आगे कनेक्टिंग फ्लाइट से जोधपुर।'' बापूजी ने सहमति दी।

कलबल-छल से की गिरफ्तारी

रात्रि १०.३० बजे बापूजी अपने कमरे में विश्राम के लिए चले गये। ११ बजे के आसपास पुलिस ने आश्रम में सर्वत्र शांति से बैठकर जप-पाठ करनेवाले भक्तों को उठाना चालू किया। बड़ी बेरहमी से अपमानजनक वचन सुनाकर अपने डंडों से पीटते हुए पुलिस ने भक्तों को उठाकर आश्रम की सड़कें खाली कर दीं। भक्तों को एक जगह बैठाकर चारों तरफ से बैरियर लगाये गये। उस समय इंदौर आश्रम में ८०० से भी अधिक संख्या में पुलिस थी। रात के १२ बजे तक बहुत बड़ा कोलाहल मच गया था। १२ बजे पुलिस की गाड़ी कुटिया में आ गयी। पुलिस ने सेवकों से कहा : ''हम १०-१५ मिनट बापूजी से सवाल करना चाहते हैं। आप बाहर बुलाइये।''

सेवकों ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की : ''बहुत थके हुए हैं, विश्राम में हैं। आपको जो भी पूछना है, सुबह पूछ लीजिये।''

पुलिस का दबाव बढ़ता गया। जब वे ऊँची

आवाज में चिल्लाने लगे तब गुरुदेव अपने कमरे से बाहर आ गये। पुलिस ने कहा : ''रात के १२ बज चुके हैं। ४ दिन के 'समन्स' का समय पूरा हो चुका है, हम आपको यहाँ से ले जायेंगे।''

सेवकों ने कहा : ''आपने ही कहा था कि सुबह की फ्लाइट से ले जायेंगे, रात को यहीं विश्राम कर लें। तो आप आधी रात को क्यों जबरदस्ती कर रहे हो ?''

पुलिस चिल्लाने लगी : ''हम क्या तुम्हारी बात मानने आये हैं ? समय पूरा हो चुका है, हम लेकर जायेंगे।''

गुरुदेव उठकर पुलिस की गाड़ी में बैठने लगे। सेवक से अपना आसन माँगा। पुलिस ने बदतमीजी से कहा : ''कोई आवश्यकता नहीं आसन-वासन की, बैठ जाओ।''

अंगद सेवक भागकर पानी की बोतल व बैग लेकर आया। पुलिस ने गाड़ी में नहीं रखने दिया। गुरुदेव के दोनों तरफ, आगे व पीछे पुलिस बैठ गयी। पुलिस की गाड़ी कुटिया के द्वार से बाहर निकल गयी। बाकी की पुलिस ने कुटिया के अंदर सेवकों पर लाठीचार्ज चालू कर दिया। भक्त गुरुदेव की गाड़ी की ओर दौड़ पड़े। लाठीचार्ज जारी रहा। गाड़ी आश्रम के प्रवेशद्वार से बाहर निकल गयी। पुलिस ने कहा था कि 'सुबह ले जायेंगे' पर रात को १२-२० बजे 'मार्शल लॉ' की रीति से एयरपोर्ट पर ले गये। रात को १ बजे से सुबह तक बापूजी को एयरपोर्ट पर बिठाकर रखा गया। सुबह जैसे ही फ्लाइट में चढ़े, मीडिया ने अंदर भी सताना चालू रखा।

दिल्ली से जोधपुर की फ्लाइट पकड़कर जोधपुर पहुँचे। उतरते ही कानूनी जाँच चालू हुई। इतना उन्हें कम लगा तो रात १२.३० तक जाँच जारी रखी। यह लगातार दूसरी रात थी कि बापूजी थोड़ी देर भी सो नहीं पाये। पूछताछ के दौरान बापूजी ने यौन-शोषण के बारे में कहा : ''हम ऐसा काम कर ही नहीं सकते।''

पूज्य बापूजी पुलिस की नजरकैद में थे। कैमरे लगे हुए थे। एक सेवक साथ में था। सेवक ने देखा कि सिर की दाहिनी तरफ काफी सूजन है। पूछने पर पता चला कि तीव्र दर्द भी है। रातभर के जागरण से 'ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया' की पीड़ा भयंकर रूप लेने लगी। जोधपुर की पुलिस कस्टडी में शिरोधारा का उपचार एकमात्र उपाय था। भयंकर हालत देखकर पुलिस को अपना मानसिक दबाव रोकना पड़ा और उन्होंने उपचार कराने की अनुमति दी। एमआरआई स्कैन में इस रोग के सभी कारणों को जाना नहीं जाता। वेबसाइट पर इसकी भयंकरता का वर्णन मिलता है। पिछले १३ वर्षों से बापूजी इस भयंकर पीड़ा से ग्रस्त हैं। इतने वर्षों में हुए रोगोपचार की १०० से अधिक रिपोर्टें नीता वैद्य के पास हैं। कहाँ गयी मानवता ? जैसा व्यवहार बापूजी के साथ हुआ, ऐसा किसीके साथ न करें।

''हिन्दू धर्म को कोई भी कदापि नहीं मिटा सकता।''

सेवक ने पूज्यश्री से कहा : ''गुरुदेव ! हमारा जो विश्वास है कि सत्य की जय होती है, उसे टूटने नहीं देना।''

बापूजी : ''वह तो है ही। इतिहास साक्षी है।''

सेवक : ''गुरुदेव ! हमसे यह सब सहन नहीं होता। भक्त अत्यंत व्यथित हैं, सड़क पर उतर आये हैं।''

पूज्यश्री : ''भगवन्नाम का जप करें।''

सेवक : ''गुरुदेव ! अगर कूटनीति ऐसे ही चलती रहेगी और संतशिरोमणि को ही जेल में डाला जायेगा तो सारा संत-समाज ही धीरे-धीरे नेस्तनाबूद किया जायेगा। हिन्दू धर्म की जड़ें उखाड़ दी जायेंगी।''

पूज्यश्री (आँखें बंद, चेहरा शांत) : ''हिन्दू धर्म को कोई भी कदापि नहीं मिटा सकता।''

उसके बाद शाम ४-४.३० बजे न्यायालय में ले जाया गया। ५ ही मिनट में सुनवाई हुई - 'जेल'। पूज्यश्री को जोधपुर के केन्द्रीय कारागृह

में ले जाया गया।

मच्छरों का बाहुल्य व रोग के उपचार के अभाव में इन संत ने कितने कष्ट सहे यह भगवान जानते हैं और वे ही जानते हैं। मीडिया द्वारा फैलाया गया कि बापूजी को जेल में कूलर, पलंग आदि सुविधाएँ दी जा रही हैं। जबकि ऐसा कुछ नहीं है। न कूलर, न तखत, न कोई सुविधा ! स्वयं जेल अधीक्षक द्वारा इसकी पुष्टि हो चुकी है।

सनसनी फैलानेवाली खबरों ने 'पीड़िता-पीड़िता' कहकर लाखों महिलाओं को पीड़ित करने का काम किया है। साजिश के तहत बापूजी की गिरफ्तारी से व्यथित लाखों-लाखों माँ-बहनें व महिलाएँ उपवास रख रही हैं।

दहेज व रेप आदि के झूठे केसों की बहुतायत से असंख्य नर-नारियाँ, कई बेगुनाह परिवार, निर्दोष आत्माएँ साजिशकर्ताओं के शिकार होकर कारावास में पीड़ाएँ सह रही हैं। ऐसे झूठे मुकदमे देश व मानवता का गला नहीं घोंटते क्या ?

एक अधिकारी ने बताया कि ''९८ प्रतिशत रेप के केस झूठे साबित हुए हैं। मेरे १२ साल के कार्यकाल में मात्र ३ केस ही सच साबित हुए हैं।''

''मैं इस गुरुकुल को बदनाम करके बंद करवाऊँगी''

कुछ दिनों पहले लड़की अस्वस्थ थी। उसका इलाज भी हुआ। इसके सबूत भी हैं। फिर उसने मानसिक अस्वस्थता दिखायी। सहेलियों से मिली जानकारी के अनुसार वह बाथरूम बंद करके तथा देर रात को छत पर टहलते हुए घंटों फोन पर बात करती रहती थी।

आरोप लगानेवाली लड़की के बारे में छिंदवाड़ा गुरुकुल की एक छात्रा ने कहा : **''वह गुरुकुल में रहना ही नहीं चाहती थी। उसे फिल्में देखना, लड़कों के बारे में चर्चा करना, फास्टफूड – इनमें अधिक रुचि थी। इन कारणों से लड़की बिगड़ न जाय इस हेतु पिता ने जबरदस्ती उसे गुरुकुल में रखा था।**

गुरुकुल का सात्त्विक भोजन व नियम-जप आदि करके वहाँ के संयत वातावरण में रहना उसके लिए कठिन था। वह छुप-छुप के फिल्में देखती थी। वह गुरुकुल से निकलना चाहती थी। कैसे निकला जाय इस पर सोचती रहती थी। आधी-आधी रात को गुरुकुल की छत पर घूमती रहती थी।''

जाने से कुछ दिन पूर्व बोलती थी : **''मुझे अपना नाम करना है। मैं इस गुरुकुल को बदनाम कर दूँगी। बदनामी होगी तो अपने-आप बंद हो जायेगा। फिर तो पिताजी को मुझे यहाँ से लेकर ही जाना पड़ेगा।''**

गुरुकुल को बदनाम करने के लिए उसने बापूजी को बदनाम करने का तरीका अपनाया। और विश्वविख्यात संत को बदनाम करने का सबसे आसान तरीका था - 'चरित्रहनन'।

आरोप लगानेवाली लड़की की एक सहेली ने बताया कि **''मैंने उससे पूछा कि तूने बापूजी के ऊपर झूठा आरोप क्यों लगाया ? तो उसने बोला : मेरे से जैसा बुलवाते हैं, वैसा मैं बोलती हूँ।''**

माँ-बाप के साथ लड़की शाहजहाँपुर पहुँची। कुछ दिन बाद उसके भाई को पुलिस के द्वारा छिंदवाड़ा गुरुकुल से वापस बुलवाया गया। जाते समय लिखित तथा विडियो इंटरव्यू में उसने गुरुकुल के प्रति अपना सकारात्मक रवैया दिखाया। बाद में षड्यंत्रकारियों से मिलने पर उसने बयान दिया कि 'गुरुकुल में भोजन नहीं दिया जाता, भूखा रखते हैं, केवल मांस-मच्छी खिलाते हैं', जो कि सरासर झूठ है और सम्भव नहीं है। ये बिल्कुल झूठे आरोप लगवाये गये, जो वहाँ के मीडिया में आये। इस प्रकार के न जाने कैसे-कैसे झूठे आरोप लगवाये गये व लड़की के द्वारा भी बेबुनियाद आरोप लगवाये गये। षड्यंत्रकारियों ने भाई-बहन से ऐसा सरासर झूठ बुलवाया। ऐसे बयान से ही षड्यंत्रकारियों की साजिश की गंध प्रकट हो जाती है।

मेडिकल रिपोर्ट पूर्णतः सामान्य

आरोप करनेवाली लड़की की मेडिकल जाँच रिपोर्ट में लिखा गया है कि उसके शरीर पर कहीं भी खरोंच, बाइट (दाँतों से काटने) के निशान नहीं हैं । उसके साथ कोई भी यौन-शोषण (सेक्शुअल एसॉल्ट) तथा शारीरिक शोषण (फिजिकल एसॉल्ट) नहीं हुआ है। मेडिकल रिपोर्ट पूर्णतः सामान्य होने के बावजूद भी रेप के लिए लगायी जानेवाली गैर-जमानती धारा ३७६ अभी भी लगी हुई है। लड़की ने भी अपने बयान में कहीं भी 'रेप हुआ' ऐसा नहीं कहा है।

कैसी मनगढ़ंत कहानी !

लड़की कहती है : 'बापूजी ने मुझे कमरे में बुलाया, मेरी माँ कमरे के बाहर बैठी हुई थी। बापूजी ने दरवाजा बंद करके मेरे कपड़े उतारने चाहे तो मैं चिल्लाने लगी तो मेरा मुँह बंद कर दिया। डेढ़ घंटे तक मेरे शरीर पर हाथ घुमाते रहे। फिर मुझे कहा : 'माता-पिता को बताना नहीं । नहीं तो जान से मार डालूँगा ।'

डेढ़ घंटे बाद मैं कमरे से बाहर आयी तो घबरायी हुई थी। माँ के साथ कुटिया के कम्पाउंड के बाहर ही जो साधक का घर है, उसमें चली गयी। मैंने अपने माता-पिता को कुछ नहीं बताया और सो गयी ।'

कैसी मनगढ़ंत बातें हैं ! जो कन्या बीमार है, इलाज हुआ, मानसिक विक्षिप्त है, उसे छिंदवाड़ा से शाहजहाँपुर व वहाँ से जोधपुर (२००० कि.मी. से अधिक दूर) माँ-बाप के साथ बुलाकर और माँ कमरे के बाहर बैठी हो तो कोई साधारण या नासमझ आदमी भी कन्या का मुँह दबाकर डेढ़ घंटे तक शरीर के ऊपरी हिस्से पर हाथ घुमाता रहे, कुचेष्टा करता रहे व पास में किसान का घर होने के अलावा माँ-बाप भी हों - ऐसा सम्भव नहीं है। माँ कुटिया के दरवाजे के बाहर बैठी है तो उसे लड़की के चिल्लाने की आवाज सुनायी क्यों नहीं दी ? डेढ़ घंटे तक जिसका यौन-शोषण हुआ हो, ऐसी कथित १६-१७ वर्ष उम्र की लड़की जब माँ के सामने आती है तब क्या माँ को उसकी हालत देखकर मन में आशंका नहीं होगी ? और शोषण डेढ़ घंटे तक हुआ, यह लड़की को ऐसी परिस्थिति में कैसे पता चला ? क्या वह घड़ी देखकर अंदर गयी थी और आने के बाद भी घड़ी देख ली थी ?

लड़की बयान में लिखवाती है कि 'मैं चुपचाप कमरे में जाकर माँ-बाप के साथ सो गयी ।' ऐसा होने पर कोई कैसे सो सकता है ? फिर सुबह किसान के बच्चों के साथ खेली व २०० रुपये भी दे गयी। कार से स्टेशन पहुँची। डेढ़ घंटे तक अगर उसका मुँह दबाया रहता, हाथ घूमता रहता, वह विरोध करती रहती तो क्या उसके शरीर पर कहीं भी कोई निशान नहीं होता ? डेढ़ घंटे दबाया हुआ मुँह देखकर उसकी माँ के मन में आशंका नहीं होती ?

कमरा बंद था। कुंडी लगायी थी। लाइट भी बंद थी। ऐसी स्थिति में डेढ़ घंटे तक लड़की अंदर रही तो वहीं बाहर बैठी माँ ने दरवाजा क्यों नहीं खटखटाया ? अथवा बाहर जो तथाकथित ३ लड़के खड़े कर दिये गये थे, उनसे क्यों नहीं पूछा ?

उस लड़की की मनगढ़ंत बातों के सिवाय पुलिस के पास घटना के बारे में क्या जानकारी है ? उसकी बातों की पुष्टि के लिए क्या प्रूफ हैं ? मेडिकल रिपोर्ट तो सामान्य ही है। घटना तो बताती है १५ अगस्त की और एफआईआर दर्ज हुई २० को। ऐसा क्यों ? लड़की उत्तर प्रदेश की, पढ़ रही थी छिंदवाड़ा (म.प्र.) में, तथाकथित घटना जोधपुर (राजस्थान) की बता रही है और फिर एफआईआर दिल्ली में रात को २-४५ बजे क्यों ? वह भी कमला मार्केट पुलिस थाना ही क्यों ? अगर वे उत्तर प्रदेश से ट्रेन, बस या हवाई जहाज से भी दिल्ली पहुँचते तो भी कमला मार्केट से पहले ३ मुख्य पुलिस थाने मेन रोड पर आते हैं। वहाँ क्यों नहीं की गयी एफआईआर ? उनकी हर चाल पर कई सवाल खड़े होते हैं।

जो भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार, समाज की व्यापक सेवा, बालक, युवाओं व महिलाओं के उत्थान, रोगग्रस्तों के उपचार, गरीबों हेतु भंडारे, हर प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं में राहतकार्य आदि में ५० वर्षों से लगे हुए हैं, ऐसे एक अत्यंत लोकप्रिय महान संत को, एक कथित १६-१७ वर्ष की लड़की की आधारहीन, एक भी पुख्ता सबूत से रहित बातों के आधार पर क्या पुलिस जेल भेज सकती है ? तो इन सबके पीछे क्या राजनीति है ? हिन्दू धर्म की जड़ें काटना ? लोगों की धर्म से श्रद्धा हटाकर उन्हें धर्मपरिवर्तन के लिए प्रेरित करना ? भारत देश भारत तभी तक है, जब तक हिन्दू धर्म है। क्या वे धर्म को मिटाकर भारत देश को ही मिटाना चाहते हैं ? कई प्रश्न उठते हैं। प्रबुद्ध समाज को इस ओर गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए। बेबुनियादी बातें फैलाकर टीआरपी बढ़ानेवाले मीडिया पर अंकुश लगानेवाले ठोस कानून भारतीय संविधान में होने चाहिए। अन्यथा समाज दिग्भ्रमित हो जायेगा, धर्म और संतों पर से विश्वास खो बैठेगा। और ये केवल हिन्दू संतों पर ही आरोप क्यों लगते हैं ? अपनी संस्कृति और धर्म से आस्था हटी तो सर्वनाश !

यतो धर्मः ततो जयः। यतो धर्मः ततो अभ्युदयः।

जब संत ही नहीं रहेंगे तो जीवन ही दिशाहीन हो जायेगा।

संत न होते जगत में, तो जल मरता संसार।

ब्रह्मज्ञानी महापुरुष अपार कष्ट, निंदा, अपमान सहते हुए भी लोक-कल्याण के कार्य में लगे ही रहते हैं। वह तो उनका स्वभाव ही होता है।

तरुवर सरोवर संतजन चौथा बरसे मेह।
परमारथ के कारणे चारों धरिया देह ॥

बापूजी के साधकों के ऊपर भी हुआ घोर अत्याचार

देश-विदेश के साधकों में इस षड्यंत्र के खिलाफ घोर रोष फैल गया है। देशभर में शांतिपूर्वक विरोध करते हुए रैलियाँ, धरना-प्रदर्शन चालू हो गये हैं।

पूज्य बापूजी के ३ साधकों के ऊपर भी झूठा आरोप लगाया गया। उनमें से एक साधक शिवा के साथ पुलिस ने पूछताछ के नाम पर आतंकवादी की तरह व्यवहार किया। आरोप लगानेवाली लड़की ने कहा कि १५ अगस्त की रात को उन सबको शिवाभाई बुला के ले गये थे। जबकि शिवाभाई की टिकट व मोबाइल लोकेशन से पता चलता है कि वे शाम को ही दिल्ली निकल गये थे। शिवाभाई से पुलिस रिमांड के बल पर कोरे कागज पर हस्ताक्षर करवाये गये। ऐसा करने के लिए पुलिस पर कितना प्रभाव-दबाव रहा होगा ! शिवाभाई के साथ बेरहमी से मारपीट की गयी, प्रलोभन दिये गये, कान का पर्दा भी खराब कर दिया गया। बापूजी के खिलाफ बयान दिलाने के लिए क्या यह साजिशकर्ताओं का पुलिस पर दबाव नहीं है ? हाथ की कोहनियों व घुटनों पर जूते पहनकर आघात करते हैं। कहते हैं कि 'यह सब मेडिकल जाँच में नहीं आयेगा।' ऐसा कहकर शारीरिक के साथ मानसिक पीड़ा भी देते हैं। भगवान ऐसी पीड़ा किसी निर्दोष को न दें, जो शिवाभाई को दी गयी। पूज्य बापूजी पर भी ऐसा दबाव बनाया गया। कोई भी कागज पढ़कर सुनाये बगैर उन पर हस्ताक्षर करवाये गये।

जब 'सहारा समय' व 'पी-7' न्यूज चैनलवालों ने पूछा तो शिवाभाई ने सारा हाल कह डाला : ''बापूजी कभी किसी लड़की से एकांत में नहीं मिलते हैं। मैं ८ साल से गुरुदेव के साथ रहता हूँ। ऐसा कुछ हुआ नहीं है और कहीं-न-कहीं ये षड्यंत्रकारियों की सेटिंग है। मेरे पास ऐसा कोई सबूत नहीं है, कोई सीडी नहीं है, जैसा मीडिया द्वारा फैलाया जा रहा है। मेरे साथ पुलिस द्वारा जबरदस्ती की जा रही थी। पुलिस ने मेरी चोटी उखाड़ दी, मेरे को बहुत मारा-धमकाया कि जो हम बोलें वह तुझे बोलना है। मेरे पास पेपर भी लाये कि तुम्हारे पास से हमें सीडी मिली है - ऐसा हस्ताक्षर करके स्वीकार करो। जबकि मेरे पास कोई सीडी नहीं है।'' शिवा ने अदालत में इस बात

की शिकायत भी की।

इस बात की पुष्टि तथा मीडिया में चल रही झूठी बातों की पोल खोलते हुए डीसीपी अजय पाल लाम्बा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा : ''हमें कहीं से कोई भी सीडी, कोई मूवी या विडियो क्लिप बरामद नहीं हुई है। ये तथ्यहीन बातें हैं।''

किसी भी व्यक्ति को पुलिस हिरासत में लेने के बाद २४ घंटों के अंदर मजिस्ट्रेट के सामने पेश करना कानूनन अनिवार्य है। फिर भी गैर- कानूनी ढंग से जोधपुर पुलिस ने ३ दिन तक शिवाभाई की रिमांड लेने के बाद उन्हें कोर्ट में पेश किया।

छिंदवाड़ा गुरुकुल की वार्डन शिल्पी का पिछले ६ माह में पूज्य बापूजी से मौखिक या फोन से कोई सम्पर्क नहीं रहा है। जोधपुर पुलिस ने छिंदवाड़ा जाकर उस पर भी दबाव डाला। साथ ही आरोप लगानेवाली लड़की की सहेलियों को भी बहलाया व धमकाया तथा उन्हें भी उसी तरह का बयान देने के लिए बाध्य किया। जो पूछताछ कुछ घंटों में पूरी हो सकती थी, उसे ३ दिन तक जारी रख के कुत्सित प्रयास किये गये। इन सबसे परेशान होकर छात्राओं ने 'राजस्थान पुलिस ऐसा दबाव क्यों बनाती है ?' ऐसा सवाल उठाया व उनके विरुद्ध नारे लगाये, तब कहीं राजस्थान पुलिस छिंदवाड़ा से वापस लौटी।

क्या यह साजिशकर्ताओं का दबाव, प्रलोभन या जो भी कुछ कहो, स्पष्ट नहीं दिखता ? इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति को छिन्न-भिन्न करने का कितना घोर षड्यंत्र हो रहा है। नहीं तो देश की सेवा करनेवाले ऐसे महापुरुष तथा उनके साधकों के साथ आतंकवादी की तरह व्यवहार नहीं किया जाता। यह घोर निंदनीय है। एक लड़की की निराधार बातों के आधार पर एक ऐसे संत, जिनकी वाणी को दुनिया के करोड़ों लोग श्रद्धापूर्वक सुनते हैं, जिन महापुरुष के साथ करोड़ों लोगों की धार्मिक भावनाएँ जुड़ी हैं, उनके साथ ऐसा अत्याचार यह न्याय-प्रणाली और कानून-व्यवस्था का दुरुपयोग नहीं तो और क्या है ? ❐

अमृत प्रजापति ने अपने ही मुँह से उगले राज

आश्रम से निकाला गया वैद्य अमृत गुलाबचंद प्रजापति आश्रम आने से पूर्व अपना निजी दवाखाना चलाने में निष्फल हुआ था और अपने देहात के दवाखाने का सारा सामान बेचकर आश्रम में आया था।

सन् २००५ में आश्रम से निकाले जाने के कुछ वर्ष पूर्व उसने 'भक्तियोग फार्मेसी' ट्रस्ट के नाम से अपने निजी दवाखाने, पंचकर्म सेंटर व दवा बनाने की फार्मेसी आदि शुरू करवाये। वह आश्रम में आनेवाले मरीजों को वहाँ भेजकर महँगा इलाज करवाता था और अपनी 'भक्तियोग फार्मेसी' की गाड़ियाँ आश्रम के बाहर खड़ी रखवाकर वहीं से दवाई लेने हेतु आग्रहपूर्वक निर्देश देता था। उसका मुख्य उद्देश्य था बापूजी पर आस्था रखकर आनेवाले मरीजों से पैसा लूटना।

मरीजों से पैसे लूटने की प्रवृत्ति तक वह सीमित नहीं रहा बल्कि आश्रम में आनेवाली महिला मरीजों के साथ अभद्र और अश्लील व्यवहार करके चिकित्सक के व्यवसाय पर उसने धब्बा लगा दिया। उसे कई बार समझाया गया, कई बार सुधरने का मौका दिया गया और कई बार उसने माफी भी माँग ली लेकिन उसमें परिवर्तन नहीं आया, उसने दुष्ट वृत्ति नहीं छोड़ी इसलिए उसे आश्रम से निकाल दिया गया।

अमृत वैद्य अपनी लोभी व विषयी वृत्ति को वश में नहीं रख पाया। उसने गरीब मरीजों के पैसे लूटे, महिला मरीजों के साथ चिकित्सा के बहाने अश्लील हरकतें कीं... और अंत में नीचता की सभी हदें पार करते हुए दुष्ट तत्त्वों के साथ मिलकर पूज्य बापूजी पर बेबुनियाद आक्षेपों की बरसात की और कृतघ्नता की पराकाष्ठा पर पहुँच गया।

आश्रम से निकाले गये वैद्य अमृत प्रजापति

ने पहले तो आश्रम पर तांत्रिक विधि के झूठे, बेबुनियाद आरोप लगाये और फिर १३-३-२०१० को न्यायाधीश श्री डी.के. त्रिवेदी आयोग के समक्ष सच्चाई स्वीकार करते हुए कहा था : **''मैं जितना समय आशारामजी के आश्रम में रहा हूँ, वहाँ मैंने तंत्रविद्या होते हुए देखा नहीं है ।''**

पूर्व में एक फैक्स के माध्यम से पूज्य बापूजी को जान से मारने की धमकी दी गयी थी तथा बापूजी से ५० करोड़ रुपये की फिरौती माँगी गयी थी । एक सप्ताह में फिरौती न देने पर पूज्य बापूजी व नारायण साँईं को तंत्रविद्या के, जमीनों के, लड़कियों के तथा अन्य फर्जी केसों में फँसाने की धमकी दी गयी थी । इस फैक्स के संदर्भ में अमृत वैद्य ने स्वीकार किया कि **''इसमें जो मोबाइल नम्बर और लैंडलाइन नम्बर लिखे हैं, वे मेरे ही हैं ।** इस फैक्स में जो नाम लिखे हैं - महेन्द्र चावला (पानीपत), राजू चांडक (साबरमती), दिनेश भागचंदानी (अहमदाबाद), शेखर (दिल्ली), शकील अहमद तथा के. पटेल - इनको मैं पहचानता हूँ ।''

मीडिया में बुरकेवाली औरत द्वारा बापूजी पर झूठे आरोप लगाये जाने के बारे में त्रिवेदी आयोग के सामने अमृत प्रजापति ने असलियत स्वीकारी थी कि **''मैंने मेरी पत्नी को स्वयं अपने हाथों से बुरका पहनाया था और पत्रकारों के सामने झूठा बयान दिलवाया था ।''**

अमृत वैद्य को आश्रम से निकालते समय (दिनांक ९-२-०५) की एक विडियो सीडी जाँच आयोग के समक्ष प्रस्तुत की गयी । सीडी में अमृत वैद्य ने उसके द्वारा आश्रम के नियमों को भंग किये जाने की बात स्वयं ही कबूल की थी ।

२००९ में अमृत वैद्य की लापरवाही व गलत इलाज से बड़ौदा में पीएच.डी. कर रहा एक नवयुवक हरिकृष्ण ठक्कर मर गया था । लोगों को ठगने के लिए ऐसे और भी कई फर्जी काम हैं जो अमृत वैद्य ने किये और फिर रंगे हाथों पकड़ा गया । जैसे बिना प्रमाणपत्र के ही नाम के आगे 'एम.डी.' लिखना, अपने को चरक (प्रसिद्ध आयुर्वेदिक दवा कम्पनी) का मान्यताप्राप्त कन्सलटैंट बताना आदि ।

महेन्द्र चावला व उसके आरोपों की हकीकत

चालबाज महेन्द्र चावला ने भी स्वयं लगाये हुए झूठे आरोपों की पोल खोलते हुए न्यायाधीश श्री डी.के. त्रिवेदी जाँच आयोग के समक्ष कहा था कि **''मैं अहमदाबाद आश्रम में जब-जब आया और जितना समय निवास किया, तब मैंने आश्रम में कोई तंत्रविद्या होते हुए देखा नहीं ।''** उसने यह भी स्वीकारा कि ''यह बात सत्य है कि कम्प्यूटर द्वारा किसी भी नाम का, किसी भी प्रकार का, किसी भी संस्था का तथा किसी भी साइज का लेटर हेड तैयार हो सकता है । बनावटी हस्ताक्षर किये गये हों, ऐसा मैं जानता हूँ ।''

साधारण आर्थिक स्थितिवाला महेन्द्र अचानक हवाई जहाजों में कैसे उड़ने लगा ? यह बात षड्यंत्रकारियों के बड़े गिरोह से उसके जुड़े होने की पुष्टि करती है ।

महेन्द्र के भाइयों ने पत्रकारों को दिये इंटरव्यू में बताया : ''हमारी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी । महेन्द्र की आदतें बिगड़ गयी थीं । वह चोरियाँ भी करने लगा । एक बार वह घर से ७००० रुपये लेकर भाग गया था । उसने खुद के अपहरण का भी नाटक किया था और बाद में इस झूठ को स्वीकार कर लिया था ।''

अब ये ही महेन्द्र चावला और अमृत वैद्य मीडिया में आकर मनगढ़ंत आरोप लगा रहे हैं । इनकी वास्तविकता जानने के बाद इनके मनगढ़ंत प्रलाप पर कोई भी विश्वास नहीं रखेगा ।

जैविक घड़ी पर आधारित दिनचर्या

उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य की प्राप्ति

समय एवं जीवनी शक्ति	कार्य
प्रातः ३ से ५ (फेफड़े में)	थोड़ा गुनगुना पानी पीकर खुली हवा में घूमना एवं प्राणायाम करना। शरीर स्वस्थ व स्फूर्तिमान होता है। ब्राह्ममुहूर्त में उठनेवाले लोग बुद्धिमान व उत्साही होते हैं और सोते रहनेवालों का जीवन निस्तेज हो जाता है।
प्रातः ५ से ७ (बड़ी आँत में)	प्रातः जागरण से लेकर सुबह ७ बजे के बीच मल-त्याग एवं स्नान कर लेना चाहिए। सुबह ७ बजे के बाद जो मलत्याग करते हैं उन्हें अनेक बीमारियाँ होती हैं।
सुबह ७ से ९ (अमाशय या जठर में)	इस समय (भोजन के २ घंटे पूर्व) दूध अथवा फलों का रस या कोई पेय पदार्थ ले सकते हैं।
९ से ११ (अग्न्याशय व प्लीहा में)	यह समय भोजन के लिए उपयुक्त है। भोजन के बीच-बीच में गुनगुना पानी (अनुकूलता अनुसार) घूँट-घूँट पियें।
दोपहर ११ से १ (हृदय में)	दोपहर १२ बजे के आसपास मध्याह्न-संध्या करने का हमारी संस्कृति में विधान है। भोजन वर्जित।
दोपहर १ से ३ (छोटी आँत में)	भोजन के करीब २ घंटे बाद प्यास-अनुरूप पानी पीना चाहिए। इस समय भोजन करने अथवा सोने से पोषक आहार-रस के शोषण में अवरोध उत्पन्न होता है व शरीर रोगी तथा दुर्बल हो जाता है।
दोप. ३ से ५ (मूत्राशय में)	२-४ घंटे पहले पिये पानी से इस समय मूत्र-त्याग की प्रवृत्ति होगी।
शाम ५ से ७ (गुर्दे में)	इस समय हलका भोजन कर लेना चाहिए। सूर्यास्त के १० मिनट पहले से १० मिनट बाद तक (संध्याकाल में) भोजन न करें। शाम को भोजन के तीन घंटे बाद दूध पी सकते हैं।
रात्रि ७ से ९ (मस्तिष्क में)	इस समय मस्तिष्क विशेष रूप से सक्रिय रहता है। अतः प्रातःकाल के अलावा इस काल में पढ़ा हुआ पाठ जल्दी याद रह जाता है।
रात्रि ९ से ११ (रीढ़ की हड्डी में स्थित मेरुरज्जू में)	इस समय की नींद सर्वाधिक विश्रांति प्रदान करती है। इस समय का जागरण शरीर व बुद्धि को थका देता है।
रात्रि ११ से १ (पित्ताशय में)	इस समय का जागरण पित्त-विकार, अनिद्रा, नेत्ररोग उत्पन्न करता है व बुढ़ापा जल्दी लाता है। इस समय नई कोशिकाएँ बनती हैं।
१ से ३ (यकृत में)	इस समय का जागरण यकृत (लीवर) व पाचन तंत्र को बिगाड़ देता है।

ऋषियों व आयुर्वेदाचार्यों ने बिना भूख लगे भोजन करना वर्जित बताया है। अतः प्रातः एवं शाम के भोजन की मात्रा ऐसी रखें, जिससे ऊपर बताये समय में खुलकर भूख लगे।

देश-विदेश में गूँजी पुकार, बंद हो बापूजी पर अत्याचार

विश्ववंदनीय पूज्य बापूजी को सुनियोजित षड्यंत्र में फँसाये जाने के खिलाफ देश-विदेश में करोड़ों श्रद्धालुओं तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों, युवा सेवा संघों एवं महिला उत्थान मंडलों के साथ विभिन्न धार्मिक, सामाजिक व महिला संगठनों ने रैलियों, धरना-प्रदर्शनों आदि के द्वारा इस षड्यंत्र एवं दुष्प्रचार का अहिंसात्मक जाहिर विरोध किया।

भारत देश ही नहीं बल्कि विदेशों के लंदन, बोस्टन, न्यूयॉर्क आदि कई शहरों में भी षड्यंत्र के खिलाफ आवाज उठायी जा रही है। दिल्ली में २३ अगस्त को विशाल रैली निकाली गयी और लाखों लोग जंतर-मंतर पर धरने में जा बैठे। निर्दोष पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई के लिए लाखों महिलाओं एवं भाइयों ने जप-पाठ व प्रार्थना के साथ कई दिनों तक व्रत, उपवास भी रखा। ४, ५ व ११ सितम्बर को भी दिल्ली में विशाल शांति रैलियाँ निकालकर श्रद्धालुओं ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं कि एक लड़की की मनगढ़ंत बातें सच्ची या हम करोड़ों साधकों के पवित्र अनुभव सच्चे ? यहाँ ११ व १२ सितम्बर को आयोजित **'जन-सत्याग्रह व विशाल संत-सम्मेलन'** में देशभर से आये संतों ने बापूजी के प्रति अपना पूर्ण समर्थन व्यक्त करते हुए इस षड्यंत्र की भारी निंदा की। जंतर-मंतर पर सतत विरोध प्रदर्शन अभी भी जारी है। पंजाब में वहाँ के प्रसिद्ध संतों ने बापूजी पर लगे आरोपों तथा षड्यंत्र के विरोध में संत-सम्मेलन कर अपनी आवाज बुलंद की।

१९ सितम्बर को मुंबई में भी श्री नारायण साँईजी एवं विभिन्न संतों की उपस्थिति में बापूजी के समर्थन में महासम्मेलन हुआ। महाराष्ट्र में मुंबई के सायन व बांद्रा, औरंगाबाद, लातूर, अकोला, जलगाँव, खामगाँव जि. बुलढाणा, नागपुर, नांदेड़, नासिक, भुसावल जि. जलगाँव, पुणे, बीड, चांदवड जि. नासिक, प्रकाशा, धुलिया, अमरावती, अहमदनगर, श्रीरामपुर जि. अहमदनगर, कल्याण, उल्हासनगर आदि स्थानों में शांति रैलियाँ निकालकर लाखों साधकों ने अपने दिल की गहरी व्यथा व्यक्त करते हुए सरकार से निर्दोष संत बापूजी की रिहाई की माँग की। उस्मानाबाद में विभिन्न धार्मिक संगठनों ने विरोध प्रदर्शन किया।

राजस्थान में बीकानेर, अलवर, श्रीगंगानगर, जोधपुर, जयपुर, उदयपुर, बाड़मेर, निवाई जि. टोंक, पीपाड़ सिटी, पाली, भीलवाड़ा तथा उत्तर प्रदेश में बलिया, मेरठ, हाथरस, जौनपुर, अलीगढ़, बरेली, बदायूँ, उझानी जि. बदायूँ, इगलास जि. अलीगढ़, गोरखपुर, झाँसी, लखनऊ, वाराणसी, आगरा, मुजफ्फरपुर (बिहार) आदि स्थानों पर शांति रैलियाँ, धरना-प्रदर्शन आदि करके लोगों ने मीडिया के भ्रामक कुप्रचार का खंडन करते हुए बापूजी के खिलाफ चल रही साजिश का अंत करने की माँग की।

मध्य प्रदेश में ग्वालियर, भोपाल, जबलपुर, रतलाम, उज्जैन, महू, छतरपुर, मुलताई जि. बैतूल, सबलगढ़ जि. मुरैना, शिवपुरी, पेटलावद जि. झाबुआ, टीकमगढ़ तथा छत्तीसगढ़ में राजनांदगाँव, कोरबा, रायगढ़, बेमेतरा, धमतरी, बिलासपुर, डोंगरगढ़ जि. राजनांदगाँव, दुर्ग आदि स्थानों पर रैली तथा विरोध प्रदर्शन हुए। रायपुर में हजारों लोगों ने ८ सितम्बर से अनिश्चितकालीन धरना शुरू किया हुआ है।

बीदर, बीजापुर, गुलबर्गा, यादगीर, धारवाड़, बैंगलोर (कर्नाटक) तथा कठुआ, राजौरी (जम्मू-कश्मीर), बोकारो, राँची, गिरिडीह, जमशेदपुर, रामगढ़, गुमला, हजारीबाग (झारखंड), बाँका, दरभंगा, डालटनगंज (बिहार) में बड़ी संख्या में लोगों ने बापूजी के विरुद्ध रची गयी साजिश के

खिलाफ मौन रैलियाँ निकालकर विरोध जताया। पटना में ५ दिन तक धरना चला तथा बेलगाम (कर्नाटक) में २० से अधिक दिनों तक लगातार धरना चला। पठानकोट, लुधियाना, चंडीगढ़, शाहपुरकंडी जि. पठानकोट, कपूरथला, जालंधर, होशियारपुर, मुकेरियाँ जि. होशियारपुर (पंजाब), भुवनेश्वर, झारसूगुड़ा, बरगड़ (ओड़िशा), फरीदाबाद, जींद, कुरुक्षेत्र (हरियाणा), जहीराबाद जि. मेदक, निजामाबाद, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) नई टिहरी, हरिद्वार, काशीपुर, देहरादून (उत्तराखंड), कोलकाता आदि स्थानों पर शांति रैलियाँ व धरना-प्रदर्शन करके विरोध जताया गया। साथ ही देशभर में संबंधित अधिकारियों को ज्ञापन भी सौंपा गया। ❐

अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद करने सड़कों पर उतरे विभिन्न संगठन

पूज्य बापूजी पर झूठे, मनगढ़ंत आरोप लगाकर उन्हें जेल भेजने के षड्यंत्र के विरोध में अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संगठन सड़कों पर उतर आये हैं तथा विभिन्न स्थानों में अलग-अलग माध्यमों से शांतिपूर्ण ढंग से विरोध व्यक्त कर रहे हैं। देश के विभिन्न राज्यों में श्री योग वेदांत सेवा समिति, युवा सेवा संघ, हिन्दू जनजागृति समिति, विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, सनातन संस्था, जैन राष्ट्रीय युवक सेना, विश्व लोकार्पण बहुउद्देशीय सेवा संघ, राष्ट्रीय वारकरी सेना, भारत स्वाभिमान, संकल्प मित्र मंडल, हिन्दू साम्राज्य सेना, बजरंग दल, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, शिवसेना, पतंजलि योग समिति, सावरकर प्रतिष्ठान, हिन्दू विधिज्ञ परिषद, श्रीराम सेना, हिन्दू एकता आंदोलन, स्वातंत्र्यवीर सावरकर स्मृति प्रतिष्ठान, समस्त हिन्दू आघाड़ी आदि अनेकानेक संगठनों की विभिन्न शाखाओं ने विरोध-प्रदर्शनों द्वारा समाज को सच्चाई से अवगत कराया तथा बापूजी के खिलाफ षड्यंत्र एवं दुष्प्रचार करनेवालों के प्रति विरोध जताया।

विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, धर्म जागरण, हिन्दू क्रांति दल, हिन्दू जागृति मंच, युवा जागृति मंच, भगवान वाल्मीकि युवा दल, सतगुरु कबीर मुख मंदिर ट्रस्ट, हिन्दू धर्म रक्षा समिति, सनातन धर्म सभा और गीता जयंती उत्सव सभा के अधिकारियों ने जालंधर में प्रेस कॉन्फ्रेंस की और अगले दिन विशाल रैली द्वारा विरोध-प्रदर्शन किया।

जंतर-मंतर, दिल्ली में सनातन संस्कृति दल, सार्थक महिला संगठन आदि विभिन्न संगठनों के तत्त्वावधान में सत्याग्रह एवं विशाल संत-सम्मेलन हुआ। इसमें देश के अनेक संतों ने निर्दोष पूज्य बापूजी पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठायी एवं उनकी शीघ्र रिहाई की माँग की।

पंजाब में वहाँ के प्रसिद्ध संतों ने बापूजी पर लगे आरोपों तथा षड्यंत्र के विरोध में संत-सम्मेलन कर अपनी आवाज बुलंद की। इस संत सम्मेलन में 'प्रधान विरक्त वैष्णव मंडल' के महामंडलेश्वर १००८ महंत श्री गंगादासजी महाराज, 'षड्दर्शन संत समाज' के महासचिव महंत शम्भूनाथजी शास्त्री, उदासीन आश्रम के महंत बाबा राजकिशोरजी, 'षड्दर्शन संत समाज' के सचिव महंत केशवदासजी महाराज, 'विरक्त वैष्णव मंडल' के सचिव महंत बलिरामदासजी महाराज, 'विरक्त वैष्णव मंडल' के कार्यकारी सदस्य स्वामी रामचन्द्रदासजी महाराज आदि अनेक संत उपस्थित थे।

स्थानाभाव के कारण सभी संगठनों एवं स्थानों के नाम यहाँ नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक स्थानों के विरोध-प्रदर्शन एवं रैलियों की तस्वीरें आप 'ऋषि प्रसाद' व इसी पत्रिका के मुखपृष्ठों एवं आश्रम की वेबसाइट www.ashram.org पर अवश्य देखें। ❐

पुण्यदायी तिथियाँ

६ अक्टूबर : पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का ४९वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस

८ अक्टूबर : मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से रात्रि १२-०५ तक)

१३ अक्टूबर : विजयादशमी (वर्ष के साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक)

१५ अक्टूबर : पापांकुशा एकादशी (यम-यातना से मुक्त करनेवाला व्रत)

१७ अक्टूबर : संक्रांति (पुण्यकाल : सुबह ८-०१ से शाम ४-०१ तक)

१८ अक्टूबर : शरद पूर्णिमा, कार्तिक स्नानारम्भ, मांद्य चन्द्रग्रहण (ग्रहण समय : १९ अक्टूबर प्रातः ३-१८ से ७-२१ तक)

२२ अक्टूबर : मंगलवारी चतुर्थी (प्रातः ७-०८ से २३ अक्टूबर सूर्योदय तक)

२७ अक्टूबर : रविपुष्यामृत योग (सूर्योदय से शाम ७-१४ तक)

३० अक्टूबर : रमा एकादशी (सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करनेवाला व्रत), ब्रह्मलीन मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस

सीडी, डीवीडी भी उपलब्ध !

पूज्य बापूजी के खिलाफ किये जा रहे षड्यंत्र की हकीकत जानने के लिए देखिये सितम्बर माह की 'ऋषि दर्शन' डीवीडी। षड्यंत्र पर अलग सीडी भी उपलब्ध है। इसे साधु-संतों, मठ-मंदिरों, सामाजिक संस्थाओं एवं कार्यालयों तक पहुँचायें। समाज के प्रमुख व्यक्तियों एवं जन-जन तक पहुँचाने की सेवा करें। इसे केबलों पर चलवायें, सार्वजनिक स्थानों में दिखायें एवं सत्य का प्रचार करें।

संत सताये तीनों जायें, तेज बल और वंश

संत सताये तीनों जायें, तेज बल और वंश।
ऐसे ऐसे कई गये, रावण कौरव और कंस ॥

सूक्ष्म जगत में संतों की आहें बहुत काम करती हैं। यह शक्ति इलेक्ट्रॉनिक शक्ति से भी ज्यादा कार्य करती है।

गुजरात में द्वारका के एक संत स्वामी केशवानंदजी के साथ ऐसा ही जुल्म हुआ था। उनको बलात्कार के झूठे मामले में घसीटा गया था और १२ साल की सजा दी गयी थी। अधिकारी आपस में मिल गये थे। केशवानंदजी को मीडिया के द्वारा इतना बदनाम किया गया था कि कोई वकील उनकी तरफ से केस लड़ने को तैयार नहीं हुआ। आखिर उनको जेल भेज दिया गया। लेकिन जिस अधिकारी ने यह षड्यंत्र रचा था उसको गोधरा में चीते ने मार डाला। दूसरा अधिकारी अशांति की खाई में जा गिरा, तीसरे अधिकारी को कुछ और भोगना पड़ा... वे तो तबाह हो गये, परंतु केशवानंदजी को तो अभी भी वहाँ के लोग मानते हैं, उनका आदर-सत्कार करते हैं। १२ साल की सजा में से ७ साल उन्होंने भोगे और बाद में सच्चाई सामने आयी तब अपील करने पर उन्हें निर्दोष घोषित कर दिया गया।

हे सनातन संस्कृति के सपूतो ! ऐसे लोगों को अनीश्वरवादी कहो या अपना अहंकार सिद्ध करने के लिए किसी भी हद तक जानेवाले तमस्-प्रधान प्रकृति के कूटनीतिज्ञ लोग कहो, उनके विरुद्ध लोहा लेने के लिए अब हम सभीको तैयार रहना पड़ेगा। ॐ... ॐ... ॐ... जुल्म करना तो पाप है, पर जुल्म सहना दुगना पाप है। अब हमें उद्यम करना होगा, अपनी संस्कृति की रक्षा एवं सेवा के लिए हमें साहसी बनना होगा। धैर्यवान होकर, आगे-पीछे का गणित लगाकर हमें कदम आगे रखने होंगे। उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम - ये छः सद्गुण तो हमारे अपने घर का खजाना है। अब उस खजाने को खोलना है। ❐

पूज्य बापूजी पर हो रहे अन्याय के खिलाफ देशभर में लाखों लोगों ने सैंकड़ों रैलियाँ, धरना-प्रदर्शन किये, फिर भी अधिकांश मीडिया ने यह सच्चाई समाज से छुपायी और कुछेक लोगों का विरोध प्रदर्शन बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया ।

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें ।

पूज्य बापूजी पर झूठे व बेबुनियाद आरोप लगवाकर एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत उन्हें गिरफ्तार करने के विरोध में देशभर में करोड़ों श्रद्धालुओं के साथ विभिन्न धार्मिक, सामाजिक व महिला संगठनों ने रैलियाँ, धरना-प्रदर्शन आदि द्वारा इन निर्दोष संत की रिहाई की माँग की ।

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें ।

पूज्य बापूजी के खिलाफ किये जा रहे षड्यंत्र एवं दुष्प्रचार से व्यथित जनता सड़कों पर उतर आयी ।